केंद्रीय समिति और वैज्ञानिकों के बीच मतभेद हैं -

1. इस कानून में बड़े जन्तुओं पर प्रयोगों की अनुमति का अधिकार एक ही केंद्रीय समिति को दे दिया गया है।
2. कानून के मुताबिक प्रत्येक प्रयोग के लिए अलग-अलग पूर्व अनुमति अनिवार्य है।
3. कानून में गैर-भारतीय स्त्रोतों से प्रायोगिक जन्तु प्राप्त करने पर लगभग पूरी तरह रोक लगा दी गई है।

इन नियमों को देखकर तथा इनके इस्तेमाल को देखकर लगता है कि ये अनुचित हैं। इसके अलावा, इनकी वजह से वैज्ञानिक अनुसंधान में जो विलम्ब होगा वह देश के लिए महंगा साबित होगा। मसलन राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद में चल रहे कैंसर औषधि सम्बंधी अनुसंधान को जन्तु अधिकार के हिमायतियों द्वारा तहस-नहस कर दिया गया। संभवतः इसका फायदा उसी काम में लगी बहुराष्ट्रीय कम्पनी को मिला होगा। लगता तो यह है कि यदि केंद्रीय सरकार नियमों और वैज्ञानिक समुदाय के वैध सरोकारों के बीच संतुलन बनाने के लिए ज़रूरी संशोधन नहीं करना चाहती, तो शायद अदालत ही एकमात्र रास्ता बचेगा।

(स्त्रोत विशेष फीचर्स)

विज्ञान समाचार

जब बच्चों के दांत आते हैं...

बच्चों के दांत आने के साथ कितनी बातें जुड़ी हैं। किसी से भी पूछिए। कहा जाता है कि दांत आने के समय बच्चों को दस्त लग जाते हैं, उन्हें बुखार आ जाता है, वे ठीक से सो नहीं पाते, और भी न जाने क्या-क्या। इन सब मान्यताओं के चलते दांत आने के समय बच्चों को कई दवाइयां, खासकर टीथिंग सिरप भी खूब पिलाए जाते हैं।

कई बरसों से इस बात के तमाम प्रमाण मौजूद हैं कि इन सारी तकलीफों का दांत आने से कोई सम्बंध नहीं है। फिर भी हाल ही में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि कई डॉक्टर, नर्सें और दवा विक्रेता इन सारी तकलीफों को दांत आने की दिक्कतें बताकर खारिज कर देते हैं - 'टीथिंग ट्रबल्स'।

दांत आने से दिक्कत होती है, यह मिथक दुनिया भर में प्रचलित है। इसकी उत्पत्ति शायद इसलिए हुई कि दांत आने के साथ-साथ संयोगवश संक्रमण भी ज़्यादा होते हैं। लगभग 8-10 माह की उम्र में ही नींद की समस्याएं भी बढ़ती हैं। मगर यह सब सामान्य विकास का हिस्सा है - लगभग इसी उम्र से बच्चे अपने माता-पिता का अनुपस्थिति महसूस कर पाते हैं और यह सीखने लगते हैं कि रोकर उन्हें वापिस सामने लाया जा सकता है।

मगर चिंता की बात तो यह है कि इंग्लैण्ड में 464 चिकित्सा पेशेवरों के सर्वे से पता चला कि इनमें में कई पेशेवर भी इन समस्याओं के लिए दांत निकलने को दोषी मानते हैं। इसी कारण से वे बच्चों को अनावश्यक रूप से दर्द निवारक और नींद की गोलियां भी दे देते हैं। आधे फार्मेसिस्ट लोग तो यह मानते हैं कि दांत आने का सम्बंध बुखार से है। इसी प्रकार से कई पेशेवर यह भी मानते हैं कि दांत आने के कारण बच्चे चिड़चिड़े हो जाते हैं।

सच्चाई यह है कि बच्चा समय-समय पर कई कारणों से चिड़चिड़ा हो जाता है। इसमें कई बार उसकी भावनात्मक ज़रूरतों का भी हाथ होता है और ध्यान पाने की इच्छा का भी। मगर एक बात तय है कि दांत आने की क्रिया से एक ही चीज़ उत्पन्न होती है - दांत। शायद मसूड़े थोड़े लाल हो जाएं, बस। मगर चिंता की बात तो यह भी है कि दांत आने के दौरान बच्चे की हर तकलीफ को दांत की समस्या बताकर टाल देने से कभी-कभी कोई गंभीर बीमारी अनदेखी रह जाती है।

(स्त्रोत फीचर्स)